'डाक पंजियन सं. जयपुर सिटी/247/2018-20
स.प.सं. 66332/97

पथ-प्रेरक

पाक्षिक

वर्ष 22 | अंक 11 | 19 अगस्त 2018 | कुल पृष्ठ: 8 | एक प्रतिः रुपए 7.00 | वार्षिक : रुपए 150/-

पूर्व संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह रेडा की जयंती मनाई

'क्षत्रिय अपना धर्म भूलता है तो महाभारत होता है'

संघशक्ति, जयपुर

महाभारत के युद्ध के अंतिम पड़ाव में दुर्योधन अपनी माता से आशीर्वाद लेने जाता है तो वे उसे आयुष्मान भव का आशीर्वाद देती हैं। दुर्योधन विजय का आशीर्वाद मांगता है तो गांधारी कहती हैं, तुम्हारे साथ धर्म नहीं हैं तो विजय कैसे संभव है। अंत में वही हुआ, धर्म के अभाव में केवल पांच पांडवों को छोड़कर सभी युद्धरत लोगों का विनाश होता है। इस प्रकार जब-जब क्षत्रिय अपने धर्म को भूलता है तो महाभारत होता है और विनाश का महातांडव होता है। हम जब धर्म पर आरूढ़ थे तो हमारा विशाल भू-भाग पर शासन था। भारतीय उप महाद्वीप सहित सम्पूर्ण मध्य एशिया के पार तक हमारा ध्वज लहराता था लेकिन ज्यों-ज्यों हम धर्म से च्युत होते गए, सिमटते गए, कमजोर होते गए और इतने कमजोर हुए कि बर्बर जातियों ने हम पर आक्रमण कर हमें पराभूत किया। उस कमजोरी को दूर करने का माध्यम है श्री क्षत्रिय युवक संघ। संघ एक उपचार पद्धति है। संघ क्षात्र भाव को अंकुरित करने का माध्यम है।

30 जुलाई को संघ के केन्द्रीय कार्यालय संघशक्ति में आयोजित पूज्य नारायणसिंह जयंती समारोह को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि हमारे में आज भी गीता में वर्णित सातो गुणों का अभाव नहीं है लेकिन उनका उपयोग कहां करना है यह विवेक खो गया है। क्षात्र भाव कमजोर हो गया है। पूज्य तनसिंह जी उस भाव को पुनर्स्थापित करना चाहते थे और ऐसा करने के लिए योग्य अनुयायी की आवश्यकता होती है। पूज्य नारायणसिंह जी ऐसे ही अनुयायी थे। सीता की खोज में ऋषिमुख पर्वत पर जाते समय राम को हनुमान के मिलने पर जिस प्रकार राम ने हनुमान को एवं हनुमान ने राम को पहचान लिया उसी प्रकार तनसिंह जी ने नारायणसिंह जी को व नारायणसिंह ने तनसिंह को पहचान लिया। मात्र 19 वर्ष की आयु में ही लगी हुई नौकरी छोड़कर तनसिंह जी के साथ हो गए, बिना मोल बिक गए। उन्होंने विवाह भी किया, बच्चे भी हुए, भाई भी थे, माता-पिता भी थे लेकिन किसी को उनसे शिकायत नहीं हुई। उन्होंने परिवार का भलीभांति निर्वाह किया। परिवार में उलझे नहीं बल्कि परिवार को गौरव प्रदान किया। माता के दूध की लाज रखी, पत्नी के चूड़े की लाज रखी। जौहर और शाकों की कल्पना करें, कितना कठोर होता था क्षात्र धर्म और इसीलिए मैं मानता हूं कि क्षात्रधर्म अलौकिक है, इसका पालन करने वाले अलौकिक हैं और इसीलिए पूज्य नारायणसिंह जी अलौकिक थे, उनके जीवन में अलौकिक घटा। आज भी संघ के अनेक स्वयंसेवक अपने परिवार में आसक्त हुए बिना उसका निर्वाह कर रहे हैं क्योंकि उन्होंने संघ के अलौकिक मार्ग को अपनाया, यह डूबने का नहीं उबरने का मार्ग है। यह आश्चर्य की बात है कि यह जानते हुए हम लौकिक चीजों का संग्रह कर रहे हैं कि ये सब एक दिन मिट जानी है। भगवान राम ने लक्ष्मण से कहा कि समस्त संग्रहों का अंत विनाश है, फिर भी हम संग्रह में संलग्न हैं। यही आश्चर्य है। पूज्य नारायणसिंह जी ने इस आश्चर्य को समझा और अपने जीवन के वास्तविक ध्येय को समझ कर उसकी पूर्ति में संलग्न हुए। श्री क्षत्रिय युवक संघ हमें उसी वास्तविक ध्येय की ओर अग्रसर करता है ताकि हम क्षात्र भाव को हमारे जीवन में उतार सकें। वरिष्ठ स्वयंसेवक माननीय महावीरसिंह जी सरवड़ी ने कहा कि 19 वर्ष की उम्र में उनका अहंकार मर गया। अपने अहंकार को मारकर ग्रहणशीलता जागृत की, दृढ़ बने और पूज्य तनसिंह जी को अपना मार्गदृष्टा स्वीकार किया। न्यूनतम आवश्यकताओं में जीना, शिकायत न करना, प्रसन्न रहना यह उनके जीवन की विशेषता थी। जो है उसे कृतज्ञता पूर्वक स्वीकार कर प्रसन्न रहना ईश्वर की आराधना है। अपनी महत्त्वकांक्षा को ईश्वरीय मार्ग के अनुकूल बनाना और एक स्तर पर उस महत्त्वाकांक्षा का भी समाप्त हो जाना विशेष लगन से संभव है और ऐसी लगन उनमें थी। उसी लगन के परिणाम स्वरूप उनमें अलौकिक घटित हुआ। उसे भी उन्होंने सहज भाव से स्वीकार किया। उस समय उनके पास बैठना अच्छा लगता था। उनका सानिध्य सुकून देता था। उन्होंने व्यष्टि से समष्टि एवं समष्टि से परमेष्टि के मार्ग पर तनसिंह जी की आज्ञाओं का अक्षरशः पालन ही नहीं किया बल्कि अपने जीवन के माध्यम से उन्हें सिद्ध भी किया और इसीलिए वे आज हम सब के प्रेरणा स्रोत हैं।

जयपुर के अतिरिक्त श्री क्षत्रिय युवक संघ की प्रत्येक इकाई में पूर्व संघ प्रमुख पूज्य नारायणसिंह जी की जयंती मनाई गई। अनेक जगह रविवार होने के कारण 29 को जयंती के उपलक्ष में कार्यक्रम रखे गए, शेष जगह 30 जुलाई को कार्यक्रम हुए।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सूरत

तनाश्रम (जैसलमेर)

मुंबई

प्रणेता से प्रेरणा

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के प्रणेता हैं। उनका जीवन हम सब स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उनके जीवन की हर घटना हमारे लिए दिशा दर्शक है जो हमें उनके मार्ग पर बढ़ने की प्रेरणा देती है। ऐसी ही प्रेरणादायी घटनाओं का संकलन पथप्रेरक के इस कॉलम में धारावाहिक रूप से प्रकाशित किया जा रहा है।

पूज्य तनसिंह जी श्री क्षत्रिय युवक संघ के संस्थापक हैं, उनको अपनी राजपूत जाति से विशेष प्रेम था। वे जाति को मातृ स्वरूपा मानकर उसकी सेवा को ही आद्यशक्ति की अर्चना मानते थे। उनके द्वारा रचित साहित्य में यह बात बार-बार प्रकट हुई है। इन बातों से एक सामान्य व्यक्ति अनुमान लगा सकता है कि वे जातिवादी थे लेकिन उनका अपनी जाति से प्रेम जातिवाद नहीं था बल्कि जाति में दायित्व बोध के अभाव की वेदना का प्रकटीकरण था। उनको उस राजपूत जाति से प्रेम था जो सम्पूर्ण संसार को संरक्षण प्रदान करती थी। जिसकी छत्र छाया में संसार फलता फूलता था। वे उसी जातीय चरित्र से अतिशय प्रेम करते थे और उसी चरित्र की पुनर्स्थापना के लिए प्रयास को भगवती की आराधना समझते थे। वे स्वयं इस उदात्त चरित्र के पर्याय थे एवं सदैव अपने ईश्वरीय भाव को जागृत रख अपने पास आने वालों को संरक्षण एवं मार्गदर्शन प्रदान करते थे। उनके जीवन के ऐसे अनेक उदाहरण है जहां प्रचलित जातिवाद उन्हें छू तक नहीं पाया और उन्होंने एक आदर्श राजपूत की भांति स्वाभाविक नेतृत्व प्रदान किया। ऐसा ही उदाहरण 1977 के बाद की लोकसभा का है।

इस लोकसभा में वे राजस्थान से चुने गए एक मात्र राजपूत सांसद थे। 1977 में संयुक्त विपक्ष की जीत के कारण राजस्थान के अनेक नए सांसद लोकसभा में पहुंचे। गंगानगर से वर्तमान लोकसभा सांसद एवं पूर्व मंत्री निहालचंद के पिता बेगाराम मेघवाल (गंगानगर), कम्युनिस्ट पार्टी के नेता एवं पूर्व सांसद श्योपतसिंह के पिता चौधरी हरीराम मक्कासर (बीकानेर), डूंगरपुर बांसवाड़ा से सांसद हीराभाई भील आदि ग्रामीण परिवेश के सांसद मात्र साक्षर भर थे। इन सभी का अधिकांश समय पूज्य तनसिंह जी को आवंटित आवास 225, नोर्थ एवेन्यु, नई दिल्ली में बीतता था। इनके अलावा राज्यसभा सांसद चौधरी नत्थीसिंह, झुंझुनूं से सांसद कन्हैयालाल जाट, चित्तौड़गढ़ से सांसद सेठ श्याम सुन्दर सोमाणी आदि का भी तनसिंह जी के आवास पर आना-जाना रहता था। ये सभी तनसिंह जी के मार्गदर्शन में ही संसदीय कार्यवाही के बारे में समझ रहे थे। राजस्थान से जुड़े मामलों में पूज्य तनसिंह जी से लगातार विचार-विमर्श कर उनके निर्देशानुसार कार्य करते थे। सभी लोग पूज्य तनसिंह जी को स्वाभाविक रूप से अपना नेता स्वीकार कर आवश्यक मार्गदर्शन लेते एवं पूज्य श्री उनका पूरा सम्मान करते हुए उन्हें संसदीय रीति-नीति से अवगत करवाते थे। एक बार उनके आवास पर ये सभी किसी गंभीर विषय पर विचार-विमर्श कर रहे थे इसी बीच गंगानगर सांसद बेगाराम मेघवाल देहाती भाषा में कुछ बोलने लगे। बांसवाड़ा सांसद हीराभाई भील ने बागड़ी भाषा में उन्हें टोकते हुए कहा कि आपणे तो अंधेरा में भालो लाग्यो है अर्थात हम तो अनायास ही सांसद बने है इसलिए ठाकुर साहब की गंभीर बातों में बीच में मत बोला करो। पूज्य तनसिंह जी ने उन्हें कहा कि इन्हें बोलने दीजिए ये हम सबकी तरह भारतीय संसद के सम्मानित सांसद है, बोलना उनका अधिकार है। जैसा ये बोल सकते हैं इन्हें बोलने दें, धीरे-धीरे लोकसभा की कार्यवाही देखकर सीख जाएंगे। उनके इस स्नेहमय मार्गदर्शन का ही प्रभाव था कि ये सभी विभिन्न जातियों एवं विचारधाराओं से संबद्ध सांसद उनके साथ रहते थे एवं उनका पूरा सम्मान करते थे। संसद के बाहर एवं भीतर पूज्य तनसिंह जी उन्हें संसदीय परम्पराओं व दिल्ली की राजनीति के दांवपेंच से अवगत करवाते। यह था उनका स्वाभाविक ईश्वरीय भाव जिसके कारण अन्य लोग उन्हें स्वतः स्फूर्त अपना अग्रगामी मानते थे।

जीवनोपयोगी जानकारी-10

गतांक से आगे.... - अभयसिंह रोडला

जीव विज्ञान विषय वर्ग के छात्रों के लिए 12वीं कक्षा के पश्चात् उपलब्ध डिग्री/कोर्सेज के बारे में जानने के बाद अब हम उनमें से मुख्य कोर्सेज में प्रवेश की प्रक्रिया के बारे में जानेंगे। एमबीबीएस., बी.एच.एम.एस., बी.ए.एम.एस., बी.यू.एम.एस., बी.एन.वाई.एस., बी.डी.एस. तथा बी.वी.एस सी.ए, एच कोर्सेज में प्रवेश प्राप्त करने के लिए वर्तमान में भारत में मुख्यतः तीन प्रवेश परीक्षाएं आयोजित होती हैं, जो इस प्रकार हैं :

(i) NEET (National Eligibility Cum Entrance Test)

यह एम.बी.बी.एस., आयुष कोर्सेज (B.H.M.S., B.A.M.S., B.N.Y.S.), बी.डी.एस. तथा B.V.Sc. AH में प्रवेश पाने हेतु अखिल भारतीय स्तर की प्रवेश परीक्षा है। अभी तक यह परीक्षा सीबीएसई द्वारा वर्ष में एक बार आयोजित की जाती थी, किन्तु आगामी वर्ष से अर्थात् 2019 से यह परीक्षा राष्ट्रीय जांच एजेन्सी (National Testing Agency) द्वारा आयोजित की जाएगी। NEET के अतिरिक्त JEE तथा UGC-NET की परीक्षाएं भी NTA द्वारा ही आयोजित की जाएगी। NTA द्वारा NET परीक्षा वर्ष में दो बार आयोजित होगी - फरवरी तथा मई माह में। परीक्षा कम्प्यूटर आधारित होगी न कि ऑनलाईन अर्थात् अभ्यर्थी को डाऊनलोड किए गए उत्तर पत्रक को कम्प्यूटर पर ही माऊस की सहायता से भरना होगा। इसमें परीक्षा के समय इन्टरनेट कनेक्शन टूटने की समस्या नहीं रहेगी। NEET परीक्षा हेतु अहर्ताएं इस प्रकार है :

(1) जीव-विज्ञान विषय वर्ग (PCB) के साथ 12वीं कक्षा न्यूनतम 50 प्रतिशत अंकों के साथ (सामान्य वर्ग के अभ्यर्थी हेतु) उत्तीर्ण की हो। 12वीं की परीक्षा दे रहे विद्यार्थी भी NEET परीक्षा में सम्मिलित हो सकते हैं।

(2) अभ्यर्थी की आयु 17 वर्ष से कम तथा 25 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए।

(3) आयु सीमा का उल्लंघन किए बगैर एक अभ्यर्थी कितनी भी बार परीक्षा में सम्मिलित हो सकता है।

NEET परीक्षा की अवधि 3 घंटे की होगी तथा प्रश्न-पत्र में कुल 180 प्रश्न होंगे जिनमें भौतिक-विज्ञान, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान तथा प्राणी विज्ञान प्रत्येक से 45-45 प्रश्न सम्मिलित होंगे। प्रत्येक सही उत्तर के 4 अंक तथा गलत उत्तर के नकारात्मक एक (-1) अंक देय होंगे।

NEET परीक्षा AIIMS तथा JIPMER के अतिरिक्त भारत के सभी सरकारी तथा प्राइवेट मेडिकल कॉलेज में प्रवेश हेतु क्वालिफाई करनी आवश्यक है।

(ii) AIIMS - MBBS : यह अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थानों में एम.बी.बी.एस. तथा बी.डी.एस. कोर्सेज में प्रवेश हेतु प्रतिवर्ष आयोजित की जाने वाली प्रवेश परीक्षा है। इस समय भारत में 9 अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान हैं, जिनमें इस परीक्षा के आधार पर प्रवेश मिलता है। ये संस्थान नई दिल्ली, भोपाल, भुवनेश्वर, जोधपुर, पटना, रायपुर, ऋषिकेश, गुन्टुर तथा नागपुर में स्थित हैं। इनमें गुन्टुर तथा नागपुर हेतु 50-50 तथा अन्य सभी हेतु 100-100 स्थान आवंटित हैं।

(iii) JIPMER : यह जवाहरलाल इन्स्टीट्यूट ऑफ पोस्ट ग्रेजुएट मेडिकल एजुकेशन एण्ड रिसर्च में प्रवेश हेतु आयोजित की जाने वाली प्रवेश परीक्षा है। यह भी AIIMS की भांति एक स्वायत्त संस्थान है जो पाण्डिचेरी में स्थित है।

'गुरु शिखर से' (विविध विषयों का कॉलम)

स्वतंत्र भारत के अग्रणी क्षत्रिय

स्वरूपसिंह जिंझनियाली

भारत वर्ष के उन्नयन में क्षत्रिय समाज का बहुत योगदान रहा है। क्षत्रियों ने अतीत से लेकर आज तक अपने बलबूते इतिहास रचा है। आजादी के बाद भारत वर्ष में कुछ प्रसिद्ध क्षत्रियों के योगदान को यहां अल्प लेखनी दी जा रही है। स्वतंत्र भारत की राष्ट्रपति श्रीमती प्रतिभा देवीसिंह पाटिल रही हैं जो महाराष्ट्र की सोलंकी खानदान की बेटी एवं राजस्थान के शेखावत (कच्छावा) खानदान की बहू हैं। भैरोसिंह शेखावत राजस्थान के तीन बार मुख्यमंत्री एवं भारत गणतंत्र के उप राष्ट्रपति रहे। मांडा (उ.प्र.) के राजा विश्वनाथ प्रतापसिंह भारत के प्रधानमंत्री तथा उ.प्र. के मुख्यमंत्री रहे। वे राजस्थान के देवगढ़ (राजसमन्द) ठिकाने के दामाद थे। साधारण कृषक परिवार में जन्में प्रखर सांसद चन्द्रशेखर (सिंह) बलिया भारत के प्रधानमंत्री रहे। राजा दिनेश सिंह, महाराजा डॉ. कर्णसिंह कश्मीर, अर्जुनसिंह, जसवन्तसिंह जसोल, कल्याणसिंह कालवी, विश्वनाथ प्रतापसिंह, संजयसिंह अमेठी, चन्द्रेश कुमारी कटोच, के.पी. सिंह देव, शंकरसिंह बाघेला, राजनाथसिंह, नरेन्द्रसिंह तोमर, राधामोहन सिंह, चन्द्रशेखर सिंह, वीर बहादुर सिंह, राजीव प्रताप रूडी आदि केन्द्र सरकारों केबिनेट में राजपूत मंत्री रहे है। महाराजा कर्णसिंह कश्मीर, महाराजा भावनगर कृष्णसिंह, रामलाल ठाकुर, त्रिभुवन नारायण सिंह, भानूप्रताप सिंह, अर्जुनसिंह, भीष्म नारायण सिंह, गोविन्द नारायण सिंह, कृष्णपाल सिंह, एस.के. सिंह, वी.पी. सिंह बदनोर, जनरल अजयसिंह झाला, अन्शुमानसिंह, श्रीमती उर्मिला सिंह आदि राज्यपाल रहे हैं। हरीश रावत एवं भगतसिंह कोशियारी उत्तराखण्ड, वीरभद्र सिंह एवं प्रेमकुमार धूमल हिमाचल प्रदेश, यशवन्त सिंह परमार हिमाचल प्रदेश, रमनसिंह छत्तीसगढ़, दीपनारायण सिंह, सत्येन्द्र नारायण सिन्हा, हरिहर सिंह बिहार महाराजा आर.एन.सिंह देव उड़ीसा के, नरेशचन्द्रसिंह, अर्जुनसिंह, गोविन्द नारायण सिंह, दिग्विजयसिंह मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री रहे है। शंकरसिंह बाघेला गुजरात, त्रिभुवन नारायणसिंह, वीर बहादुर, जगदम्बिपाल , वी.पी.सिंह, राजनाथ सिंह उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री रहे। डॉ. नगेन्द्रसिंह डूंगरपुर अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे। के.एन. सिंह, भुवनेश्वर प्रसाद सिन्हा एवं ठाकुर तीरथसिंह सर्वोच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश रहे। थलसेना अध्यक्ष जनरल राजेन्द्रसिंह जाड़ेजा जामनगर रहे। एडमिरल विजयसिंह शेखावत एवं एडमिरल माधवेन्द्रसिंह नाथावत भारतीय नौ सेना के प्रमुख रहे। वर्तमान केन्द्रीय मंत्री जनरल बी.के. सिंह भारतीय थल सेना प्रमुख रहे।

(शेष पृष्ठ 7 पर)

'संगठन साधन है साध्य नहीं'

(संघ प्रमुख श्री का गुजरात प्रवास)

हम संगठन बनाना चाहते हैं। यत्र-तत्र संगठन की बातें होती है लेकिन संगठन साधन है साध्य नहीं है। हम संगठन बनाएं यह महत्त्वपूर्ण नहीं है, हम संगठन क्यों बनाएं यह महत्त्वपूर्ण है। क्षत्रिय यदि क्षत्रियत्व अर्जित कर क्षत्रिय नहीं बनेगा तो वह राक्षस बनेगा क्यों कि शक्ति कभी निष्क्रिय नहीं रह सकती और क्षत्रिय के पास शक्ति होती है। शक्ति सत या तम में से किसी एक को चुन लेगी। संगठन से भी शक्ति अर्जित होती है ऐसे में संगठन क्यों बनाएं यह स्पष्ट नहीं होगा तो ऐसी संगठित शक्ति तमाक्रांत होकर राक्षसत्व का भी विस्तार कर सकती है। इसलिए संगठन का सतोमुखी होना चाहिए। ऐसा संगठन ही कल्याणकारक हो सकता है। श्री क्षत्रिय युवक संघ ऐसा ही संगठन है। अपने गुजरात प्रवास के दौरान सुरेन्द्रनगर स्थित संघ कार्यालय 'शक्तिधाम' में 7 अगस्त को सुरेन्द्रनगर के अग्रणी समाज बंधुओं के स्नेह मिलन को संबोधित करते हुए माननीय संघ प्रमुख श्री ने उपर्युक्त बात कही। उन्होंने कहा कि किए बिना कुछ होता नहीं और दिए बिना कुछ नहीं मिलता नहीं। इसलिए समाज में कुछ घटित होता देखना चाहते है तो देना प्रारम्भ करें। अपने गुणों को दें साथ-साथ अपने दुर्गुणों को छोड़कर गुणों का आधान करना है। उपदेश देने की अपेक्षा हम हमारे अनुभव दें क्योंकि अनुभव हमारी अपनी कमाई होती है। जिसकी प्रवृत्ति सतोन्मुखी होगी वहीं संगठन सफल होगा, हां देरी हो सकती है। मुझे पूरा विश्वास है कि संघ अवश्य सफल होगा क्यों कि हम परमेश्वर का काम कर रहे है। संघ को हम नहीं हमारे अंदर बैठा परमेश्वर चला रहा है। संघ का काम शताब्दियों का काम है। मेरे पास संघ के अलावा कोई बात नहीं है, कोई दूसरी बात जानता ही नहीं हूं, एक ही काम करता हूं दूसरा कोई काम नहीं है। हम प्रायः सोचते हैं कि जमाना बदल रहा है, हमें भी बदलना चाहिए लेकिन विचार करें कि जमाने के बदलने के साथ हमें बदलना है या जमाने के अनुकूल हमारे साधन बदलने हैं। प्रायः हम हीन भावना से ग्रसित होते हैं कि अन्य लोग हमारे से आगे निकल गए। हमे इस भावना को निकालना चाहिए, हमारे से कोई आगे नहीं निकल सकता। हमारी अपनी संपदा हमारा चरित्र है और वह आज भी तुलनात्मक रूप से ठीक हैं, इसे ही पूर्वजों की प्रतिष्ठा के अनुकूल बनाना है। संघ यही काम कर रहा है।

माननीय संघ प्रमुख श्री 4 से 9 अगस्त तक गुजरात के सुरेन्द्रनगर के प्रवास पर रहे। माननीय संघ प्रमुख श्री के साथ राजस्थान के लगभग 100 स्वयंसेवक भी सुरेन्द्रनगर पहुंचे। सुरेन्द्रनगर में संघ का क्षेत्रीय कार्यालय 'शक्तिधाम' 1998 में बना। यहां संघ के अनेक विशेष शिविर हुए जिसमें राजस्थानी स्वयंसेवक भी पहुंचे। लेकिन ज्यों-ज्यों काम बढ़ता गया नया निर्माण होता गया। राजस्थान के अनेक स्वयंसेवकों ने 'शक्तिधाम' नहीं देखा था इसलिए एक साथ दर्शन का कार्यक्रम रखा गया। इस स्थान पर एक अष्ट कोणीय मुख्य भवन बना है जिसमें अण्डर ग्राउण्ड, एक कमरा, हॉल व रसोई घर बना है। छत पर संघ प्रमुख श्री का आवास बना है। पीछे के भाग में एक सुन्दर यज्ञ शाला बनी है। मुख्य भवन के अतिरिक्त एक बड़ा हॉल, बड़ा रसोईघर, स्टोर एवं शौचालय स्नानघर बना है। लकड़ी के दो साधना कक्ष बने हैं। इस कार्यालय में गुजरात में संघ के वरिष्ठतम एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा रहते हैं। सभी राजस्थानी स्वयंसेवक 4 अगस्त को पहुंचे, निकट स्थित धोली धजा बांध पहुंचे, स्नान किया। साहब श्री ने सभी को कार्यालय संबंधी जानकारी दी एवं गुजरात में संघ कार्य पर चर्चा हुई। 5 अगस्त को सभी अपने गंतव्य की ओर रवाना हुए। 5 अगस्त को गुजरात के दोनों संभागों के 100 से अधिक स्वयंसेवकों ने संघ प्रमुख श्री का सानिध्य पाया। संघ के अष्ट सूत्रीय कार्यक्रम व शाखाओं पर विस्तार से चर्चा हुई। सूरत, मुंबई, पूना एवं अहमदाबाद ग्राम्य प्रांत के स्वयंसेवक 5 व 6 अगस्त को दो दिन तक कार्यालय में रुके एवं साहब श्री का सानिध्य पाया। 7 अगस्त को सुरेन्द्र नगर में चल रही विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के प्रमुखों एवं सहयोगियों का एक स्नेहमिलन एवं स्नेहभोज रखा गया। 8 अगस्त को संघ प्रमुख श्री सुरेन्द्रनगर में दो स्वयंसेवकों के नए मकान पर पधारे एवं उनकी खुशियों में शरीक हुए। 9 अगस्त को संघ बंधुओं और उनके परिवारों का पारिवारिक भोज संघ कार्यालय में रखा गया। 9 की रात्रि को 10 बजे संघ प्रमुख श्री ने रेल मार्ग से जयपुर के लिए प्रस्थान किया। 4 अगस्त को प्रातः 11 बजे माननीय संघ प्रमुख श्री अखिल गुजरात राजपूत युवा संघ द्वारा संचालित बालिका छात्रावास में पधारे एवं 8 बालिकाओं व संचालकों से मिले। इस कार्यक्रम में डॉ. जयेन्द्रसिंह जाड़ेजा भी शामिल हुए।

आम सूचना

माननीय संघ प्रमुख ने मिलने अनेक लोग आते हैं और इस दौरान वे संघ प्रमुख श्री के साथ अपनी फोटो खींच कर सोशल मीडिया पर वायरल कर देते हैं। ऐसी फोटो को देखकर ऐसे लोगों को संघ का या संघ समर्थित मानने की गलत फहमी पैदा होती है। ऐसी किसी भी गलत फहमी का केन्द्रीय कार्यालय में सम्पर्क कर निराकरण कर लेना चाहिए।

● संचालन प्रमुख श्री क्षत्रिय युवक संघ

संपादकीय

'लोहा पिघल रहा है'

लोहा सबसे कठोर धातु मानी जाती है। उच्च तापमान होने पर ही पिघलता है। इसीलिए मजबूत इरादों वाले व्यक्ति को लोह पुरुष की संज्ञा दी जाती है। ऐसे पुरुष सामान्य दबाओं के आगे झुकते नहीं, बड़े उद्देश्यों के लिए छोटे स्वार्थों की तिलांजलि देते हैं इसीलिए इनके इरादे मजबूत रह पाते हैं और ये लोह पुरुष की संज्ञा पाते हैं। हमारे देश में भी ऐसे अनेक लोग हुए जिन्हें इस संज्ञा से नवाजा गया। उनके इरादे कितने मजबूत थे यह अलग विषय है लेकिन फिर भी प्रचार तंत्र के युग में उन्हें ऐसा कहा गया। 2014 में देश ने ऐसे ही एक लोह पुरुष को चुना जिसने अपने आपको मजबूत इरादों वाला प्रचारित किया। समस्त प्रकार के दबावों को नकार कर अपने इरादों से न डिगने वाले के रूप में प्रचारित किया और देश ने उस प्रचार तंत्र में फंसकर पूर्ण बहुमत के साथ इन तथाकथित लोह पुरुष को भारत की संप्रभुता का प्रतीक बनाया। संविधान का रक्षक बनाया एवं संवैधानिक मूल्यों का संवाहक बनाया। लेकिन शनैः शनैः देश ने देखा की यह लोहा पिघलने लगा। कभी विदेश नीति के रूप में पिघलते देखा तो कभी कश्मीर नीति में पिघलते देखा। कभी देश के चुनींदा धनकुबेरों के सामने पिघलते देखा तो कभी विभिन्न प्रदेशों के तानाशाही नेतृत्व के सामने पिघलते देखा। इस प्रकार पिघलते-पिघलते यह लोहा इतना तरल हो गया कि उच्चतम न्यायालय के न्यायपूर्ण फैसले को बदलने को भी तत्पर हो गया और सांसदों की भीड़ के बल पर न्याय का गला घोंटते हुए अपने राजनीतिक स्वार्थ के लिए इस पिघले हुए लोहे ने न्याय का गला ही घोंट दिया। वर्ग विशेष की अवांछित मांग को संतुष्ट करने के लिए अपने पूर्ववर्ती राजीव गांधी के ऐसे ही फैसले के विरोध में आसमान उठाने वाले इस लोहे ने अपनी राजनीतिक रोटियां सेंकने के लिए स्वयं वैसा ही कृत्य कर इतिहास को दोहरा दिया। जिस अलोकतांत्रिक कानून के कारण षड्यंत्रकारी लोगों द्वारा निरपराध लोगों को परेशान किया जाता है उस अलोकतांत्रिक कानून के बारे में उच्चतम न्यायालय की व्यवस्था के खिलाफ जाकर उसे और अधिक अन्यायपूर्ण बनाकर लागू करना सिद्ध करता है कि यह लोहा वास्तव में लोहा था ही नहीं। यह उसी प्रकार के कमजोर लोगों का समूह है जो वोट के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं। अब तक देश का नेतृत्व करने वाला समूह संप्रदायों का तुष्टिकरण कर वोटों की फसल काटता था लेकिन यह नया समूह तो संप्रदायों के साथ-साथ जातियों का भी घोर तुष्टिकरण कर वोटों की झोली भरना चाहता है। विगत सरकारों की अल्पसंख्यक परस्त राजनीति के कारण देश का बहुसंख्यक हिन्दू समाज जिस प्रकार स्वयं को उपेक्षित महसूस करता था उसी प्रकार इस नए समूह ने देश के सामान्य वर्ग को घोर उपेक्षा एवं निराशा के गर्त में डाला है। आजादी के बाद से ही सामान्य वर्ग और विशेष कर राजपूत समाज यह मानता आया कि आजादी के बाद पनपी व्यवस्था उसके खिलाफ है। लेकिन शनैः शनैः विभिन्न विपरीत व्यवस्थाओं के बावजूद अपने आपको बदला एवं देश की वर्तमान व्यवस्था का उपयोगी अंग बनने का प्रयास किया। 2014 में आई पूर्ण बहुमत की सरकार के बाद ऐसे सभी वर्ग राहत महसूस कर रहे थे कि जिन लोगों को पनपाने के लिए विगत 70 वर्षों से प्रयास कर रहे थे वे लोग सत्ता में आए हैं ऐसे में ऐसे सभी कानूनों की समीक्षा होगी जो असंवैधानिक हैं, संविधान की प्रस्तावना में व्यक्त भावना के खिलाफ हैं। लेकिन इस सरकार ने स्वयं समीक्षा करने की अपेक्षा न्यायालय द्वारा स्वतंत्र रूप से की गई समीक्षा को भी नकार दिया। अपने सांसदों की भीड़ के बल पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति अत्याचार निवारण के नाम पर बने अन्यायपूर्ण कानून को और अधिक मजबूती प्रदान कर दी। यहां सांसदों की भीड़ शब्द पर एतराज हो सकता है लेकिन यह वस्तुस्थिति है। भीड़ उसे ही कहते हैं जो अपने विवेक का इस्तेमाल किए बिना आगे चलने वाले की साधन मात्र होती है और हमारे सभी माननीय सांसदों ने भी सब कुछ जानते हुए भी हां में हां मिलाकर अपने भीड़ होने का ही सबूत दिया है। लेकिन हम क्या करें, हमारे पास तो विकल्प बहुत सीमित हैं। ऐसे में एक मात्र उपाय अपने वोटों की संगठित ताकत दिखाना है क्योंकि ये सभी लोह पुरुष वोटों की ताकत के समक्ष तरल होकर चरण प्रक्षालन करने को बहने लगते हैं और यही एक मात्र उपाय हम सब के लिए चुनौती है। जब तक हम इस चुनौती को नहीं स्वीकारेंगे इसी प्रकार के काले कानूनों का शिकार बनते रहेंगे। पक्ष-विपक्ष सभी हमारी उपेक्षा करते रहेंगे, हम इस देश की व्यवस्था द्वारा उपेक्षित, निराश्रित एवं मजबूर मतदाता बने रहेंगे क्यों कि इन्हें पता है कि हमारे पास विकल्प का अभाव है। लेकिन यहां यह सावधानी भी आवश्यक है कि ऐसी उपेक्षा और निराशा में अराजक तत्व हमें अपना निशाना बनाते हैं और हमारी निराशा का उपयोग कर हमें भी अराजक बना देते हैं। कोई भी अराजकता समस्या का हल नहीं बल्कि स्वयं एक समस्या है इसलिए सावधानी पूर्वक अराजक होने से बचें एवं साहस पूर्वक उपलब्ध विकल्पों पर ही आगे बढ़ने का प्रयास करें।

सांसदों की भीड़ के बल पर केन्द्र सरकार द्वारा अजा-जजा अत्याचार निवारण कानून पर उच्चतम न्यायालय के निर्णय को पलटने के अलोकतांत्रिक एवं अन्यायपूर्ण कारनामे का पथप्रेरक अपना आधा पृष्ठ काला रखकर लोकतांत्रिक तरीके से विरोध करता है।

शिविर सूचना

क्र.सं.	शिविर	समय	स्थान मार्ग आदि
1.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 03.09.2018 तक	**सिद्धपुर** (गुजरात), बालकेश्वर महादेव मंदिर।
2.	प्रा.प्र.शि. (बालिका)	01.09.2018 से 03.09.2018 तक	**सूरत** (गुजरात)
3.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**गंगाला** (बाड़मेर) सोढ़ों की ढाणी, चौहटन से खड़ीन मार्ग पर निजी बसें उपलब्ध।
4.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**धौलिया** (जोधपुर)। फलोदी से हर दो घंटे में बस। पोकरण से प्रातः 7.15 व दोपहर 3 बजे बस। नोख से प्रातः 8 व सायं 8 बजे बस उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** गिरधारी सिंह धौलिया 9982314264
5.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**कोयल** (नागौर)। निम्बी जोधा से साधन उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** 9950134267
6.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**ठाकरियावास** (नागौर)। डीडवाना से बस उपलब्ध।
7.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**रेड़ी** (चूरू)। **सम्पर्क सूत्र :** 9610925626, 9982588917
8.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**कावनी** (बीकानेर) पूंगल फांटा बीकानेर से बसे उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** 9928827533
9.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**झालोड़ा** (जैसलमेर)। पोकरण व फलसूण्ड से बस।
10.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**धारणा रावला बेरा** (बाड़मेर)। सिवाना-पादरू मार्ग पर धारणा उतरकर निम्बाला रोड रावला बेरा पहुंचे।
11.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**भेड़,** ओसियां (जोधपुर)।
12.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**बेलवा** (जोधपुर)। श्री मंगल बाल उ.मा.वि. बेलवा (शेरगढ़)।
13.	प्रा.प्र.शि.	01.09.2018 से 04.09.2018 तक	**मारवाड़ जंक्शन** (पाली)। सरस्वती विद्या मंदिर। पाली व सोजत से साधन उपलब्ध।
14.	प्रा.प्र.शि.	08.09.2018 से 10.09.2018 तक	**जाडी** तहसील धानेरा (गुजरात)। धानेरा से रेल व बस सेवा।
15.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**डंडाली** (बाड़मेर)। गोपणेश्वर महादेव मंदिर-सिणधरी, बालोतरा व बायतु से बसें उपलब्ध।
16.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**मोड़ी माताजी** (म.प्र.)। तहसील-जावद, जिला-नीमच।
17.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**जगदीश उमरी** जिला-भीलवाड़ा, रायपुर व बोराणा से बस उपलब्ध।
18.	प्रा.प्र.शि.	16.09.2018 से 19.09.2018 तक	**फतहनगर,** चित्तौड़गढ़-उदयपुर मार्ग पर वाया मावली।
19.	प्रा.प्र.शि.	18.09.2018 से 21.09.2018 तक	**दासपां (जालोर)**। भीनमाल व सियावट से बस उपलब्ध। **सम्पर्क सूत्र :** 9769218714
20.	प्रा.प्र.शि.	18.09.2018 से 21.09.2018 तक	**विरोल** (जालोर)। शिव मंदिर। साचौर से बस। **सम्पर्क सूत्र :** 7976005765

नोट : विगत अंक में प्रकाशित प्रा.प्र.शि. रोहिचाकलां जो 19.08. से 22.08.2018 तक होने वाला था। वह स्थगित किया गया है। नई तिथि पुनः प्रकाशित की जाएगी।

शिविर में आने वाले युवक काला नीकर, सफेद कमीज या टीशर्ट, काली जूती या जूता व युवतियां केसरिया सलवार कमीज, कपड़े के काले जूते, मौसम के अनुसार बिस्तर (एक परिवार से दो जने हों तो अलग-अलग), पेन, डायरी, टॉर्च, रस्सी, चाकू, सूई-डोरा, कंघा, लोटा, थाली, कटोरी, चम्मच, गिलास साथ लेकर आवें। संघ साहित्य के अलावा कोई पत्र-पत्रिका, पुस्तकें एवं बहुमूल्य वस्तुएं साथ ना लावें। उच्च प्रशिक्षण शिविर में आने वाले मेरी साधना पुस्तक साथ लेकर आवे।

राजेन्द्रसिंह बोबासर, शिविर कार्यालय प्रमुख

शाखा के शिक्षण प्रमुखों की कार्यशाला

शाखा संघ के शिक्षण की प्रथम कड़ी है। नियमितता और निरंतरता का प्रकटीकरण है शाखा। शाखाओं में होने वाले निरन्तर अभ्यास से ही संस्कारों का सींचन होता है ऐसे में शाखाओं के शिक्षण को निरन्तर अद्यतन रखना आवश्यक है। शाखाओं में शिक्षण की धूरी शिक्षण प्रमुखों को भी आवश्यक मार्ग दर्शन की आवश्यकता रहती है। इसी आवश्यकता के मद्देनजर 4 व 5 अगस्त को जोधपुर संभाग की शाखाओं के शिक्षण प्रमुखों की दो दिवसीय कार्यशाला राजपूत छात्रावास ओसियां में रखी गई। कार्यशाला में 32 शिक्षण प्रमुख उपस्थित हुए जिन्हें शाखा विभाग के प्रमुख महेन्द्रसिंह गुजरावास ने प्रशिक्षण दिया। प्रथम दिन कार्यशाला की उपयोगिता, स्वयंसेवक के विकास में शाखा की भूमिका, शाखा लगाने में आने वाली कठिनाइयों पर चर्चा की गई। झनकार के प्रारम्भ के 60 सहगायनों के गायन का अभ्यास करवाया गया। द्वितीय दिवस शाखा शिक्षण रूचिपूर्ण बनाने के लिए किए जाने वाले कार्यक्रमों यथा अधिकतम संख्या दिवस, शाखा भ्रमण, जयंतियों, उत्सवों आदि को लेकर चर्चा की गई। शाखा के स्तर के अनुसार शिक्षण को लेकर भी चर्चा की गई। शाखा में आने वाले स्वयंसेवकों के सर्वांगीण विकास हेतु की जाने वाली गतिविधियों को लेकर चर्चा की गई। दोनों दिन शाखा लगाने का प्रायोगिक अभ्यास करवाया गया। सभी शिक्षण प्रमुखों को एक-एक विशल व निर्देशिका दी गई। निर्देशिका में वर्णित शाखा प्रमुख, शिक्षण प्रमुख एवं विस्तार प्रमुख के दायित्वों को विस्तार से समझाया गया। द्वितीय दिवस ओसियां स्थित परमहंस आश्रम जाकर स्वामी अड़गड़ानंद जी महाराज के शिष्य सुखराम बाबा का सानिध्य पाया एवं बाबाजी से आध्यात्मिक चर्चा की। भोजनोपरांत सभी अपने गंतव्य को रवाना हुए। भोजनादि व्यवस्थाओं का दायित्व पदमसिंह ओसियां ने संभाला।

कारगिल शहीद की पुण्यतिथि मनाई

झुंझुनूं जिले के मलसीसर कस्बे में कारगिल युद्ध में शहीद हुए गजराजसिंह निर्बाण की 18वीं पुण्यतिथि मनाई गई एवं स्मारक स्थल पर पौधरोपण किया गया। गजराजसिंह निर्बाण युवा मंडल द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सामाजिक कार्यकर्ता यशवर्धन सिंह शेखावत ने शहीदों की देशभक्ति एवं संघर्ष के जज्बे से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ने की बात कही। सरपंच बिस्मिला चौहान ने अध्यक्षता की एवं थानाधिकारी सुनीलकुमार, पूर्व सरपंच संतोष व कैप्टन ताज मोहम्मद विशिष्ट अतिथि के रूप में मौजूद रहे। उल्लेखनीय है कि शहीद के पिता जयसिंह निर्बाण भी पूर्व सैनिक थे।

प्रवेश चालू

आधार कार्ड से बिना टी.सी. सरकारी बोर्ड से सीधे दसवीं करें।

सरकारी ओपन बोर्ड से घर बैठे बिना टी.सी. किसी भी उम्र में आधार कार्ड से सीधे दसवीं करें।

5, 6, 7, 8, 9वीं फैल या पास 10वीं करें।

ए ग्रेड यूनिवर्सिटी से पत्राचार द्वारा घर बैठे बी.ए., एम.ए. गारंटी से पास करें।

आदर्श सीनियर सैकण्डरी स्कूल

सोलंकियातला, शेरगढ़, जोधपुर

व्यवस्थापक : सांगसिंह, मो : 9783202923

'क्षत्रिय अपना धर्म भूलता है तो महाभारत होता है'

जाविया, जालोर

बीकानेर

जोधपुर

पृष्ठ एक का शेष

29 जुलाई को सूरत के हलधरू स्थित मातेश्वरी सोसायटी में जयंती मनाई गई जिसमें वरिष्ठ एवं वयोवृद्ध स्वयंसेवक प्रवीणसिंह जी बावलियारी ने पूज्य नारायणसिंह जी के साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाए। प्रांत प्रमुख खेतसिंह चांदेसरा ने पूज्य श्री का जीवन परिचय प्रस्तुत किया। मुंबई की शाखाओं ने 29 जुलाई को ही भायंदर शाखा में जयंती मनाई। चक्रवर्ती सिंह देसु, अनोपसिंह करड़ा आदि ने पूज्य श्री के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। जालोर के जावीया स्थित खोडेश्वर महादेव मंदिर में प्रकृति के सुरम्य वातावरण के बीच स्वयंसेवकों एवं सहयोगियों ने पारिवारिक स्नेहमिलन, स्नेहभोज व भ्रमण आयोजित कर जयंती मनाई। कार्यक्रम में बताया गया कि पूज्य नारायणसिंह जी ने संघ को उत्सव के रूप में लिया और सर्वात्मना शामिल होकर संघ में एकाकार हो गए। उदयपुर के ओसवाल नगर में त्रैमासिक स्नेहमिलन के रूप में 29 जुलाई को जयंती मनाई जिसमें संभाग प्रमुख भंवरसिंह बेमला ने पूज्य श्री के जीवन के बारे में जानकारी दी। बाड़मेर की भिंयाड़ शाखा में जयंती मनाई गई। प्रांत प्रमुख राजेन्द्रसिंह भियाड़ द्वितीय ने पूज्य श्री के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। पाली की छोटी रानी शाखा में प्रांत प्रमुख हीरसिंह लोड़ता एवं अन्य स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री का स्मरण किया। कुचामन की सभी शाखाओं के स्वयंसेवकों ने कुचामन फोर्ट में भ्रमण आयोजित कर जयंती मनाई। प्रांत प्रमुख नत्थु छापड़ा ने पूज्यश्री के जीवन के बारे में जानकारी दी। सुजानगढ़-लाडनूं प्रांत का कार्यक्रम बीदासर में रखा गया जिसमें बैनाथा, दूंकर, रेड़ा, कोड़ासर, सांडवा, घंटियाल, बोबासर, लालगढ़ आदि गांवों के समाज बंधु शामिल हुए। कार्यक्रम में उगमसिंह गोकुल, संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा व वयोवृद्ध स्वयंसेवक सुमेरसिंह गुड़ा ने संघ व पूज्य श्री के बारे में जानकारी दी। नागौर प्रांत का कार्यक्रम शहीद सुमेरसिंह झटेरा स्मारक पर रखा गया जिसमें भी संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा शामिल हुए। नागौर के अमर राजपूत छात्रावास में भी जयंती मनाई गई। बीकानेर स्थित संभागीय कार्यालय नारायण निकेतन में 29 जुलाई को कार्यक्रम रखा गया जिसमें बाड़मेर संभाग के संभाग प्रमुख देवीसिंह माडपुरा ने पूज्य श्री के जीवन के बारे में बताते हुए कहा कि संघ में पूज्य श्री ने पारिवारिक भाव को पोषित पर घनत्व बढ़ाया। कार्यक्रम के बाद पारिवारिक स्नेहभोज रखा गया।

नागौर जिले के संभागीय कार्यालय आयुवान निकेतन कुचामन में 30 जुलाई को पारिवारिक स्नेहमिलन के रूप में जयंती मनाई गई। वयोवृद्ध स्वयंसेवक भगवतसिंह सिंघाणा व संभाग प्रमुख शिम्भुसिंह आसरवा ने संघ व पूज्य श्री के बारे में जानकारी दी। चित्तौड़गढ़ की साप्ताहिक शाखा में मनाई जयंती में संभाग प्रमुख गंगासिंह साजियाली ने बताया कि 1971 में उन्हें छह माह तक पूज्य नारायणसिंह जी के साथ यात्राओं में रहने का सौभाग्य मिला। वे सदैव तरोताजा रहते थे। जोधपुर से नागौर, चुरू, जयपुर आदि जिलों से होते हुए गुजरात तक की शाखाओं एवं शिविरों का दौरा किया लेकिन थकान को अपने निकट नहीं आने दिया। बालोतरा प्रांत की कल्याणपुर शाखा में वीरमसिंह थोब के संचालन में कार्यक्रम हुआ। जालमसिंह घड़सी का वाडा, किशनसिंह पड़िहारों की ढाणी, दौलतसिंह मूंगेरिया आदि ने पूज्यश्री के पदचिह्नों पर चलने का आह्वान किया। बालोतरा के वीर दुर्गादास राजपूत छात्रावास में मंडल प्रमुख सोहनसिंह कालेवा के संचालन में जयंती मनाई जिसमें बलवंतसिंह कोटड़ी, मदनसिंह नौसर, रामसिंह भीमरलाई, महेन्द्रसिंह साजियाली आदि ने अपने विचार रखे। पोकरण की राजगढ़ शाखा में डिप्टीसिंह राजगढ़ के संचालन में जयंती मनाई। वक्ताओं ने पूज्यश्री के जीवन को प्रेय से श्रेय की ओर बढ़ने की प्रेरणा बताया।

गुजरात के बनासकांठा प्रांत में पीलुड़ा, वलादर, नारोली, काबुण, थराद में जयंती मनाई गई। वरिष्ठ स्वयंसेवक अजीतसिंह कुणधेर के नेतृत्व में स्वयंसेवकों की टीम अलग-अलग समय में सभी जगह पहुंची व पूरे दिन विभिन्न स्थानों पर जयंती मनाई। सभी जगह पूज्यश्री के जीवन की प्रेरणादायी बातों का अनुकरण करने का आह्वान किया गया। जैसलमेर की तेजमालता शाखा के स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। रामगढ़ के राजपूत छात्रावास व राधवा में प्रांत प्रमुख पदमसिंह रामगढ़ के संचालन में जयंती मनाई। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा ने पूज्यश्री के जीवन के बारे में जानकारी दी। जैसलमेर शहर का कार्यक्रम तनाश्रम में संपन्न हुआ जिसमें संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा के साथ-साथ प्रांत प्रमुख नरेन्द्रसिंह तेजमालता, तारेन्द्रसिंह झिझनियाली आदि उपस्थित रहे। मूलाना मंडल की दोनों शाखाओं ने मूलाना में जयंती मनाई। देवीकोट के रूपादे मल्लीनाथ छात्रावास में जयंती मनाई जिसमें प्रांत प्रमुख तारेन्द्रसिंह भी शामिल हुए। संभाग प्रमुख गोपालसिंह रणधा ने पूज्यश्री के जीवन के बारे में बताया। बेरसियाला में वरिष्ठ स्वयंसेवक बाबूसिंह बेरसियाला एवं झिंझनियाली में वरिष्ठ स्वयंसेवक रेमतसिंह झिंझनियाली की उपस्थिति में जयंती मनाई गई।

जोधपुर शहर में 30 जुलाई को चौपासनी में कार्यक्रम रखा गया जिसमें शहर में रहने वाले स्वयंसेवकों ने पूज्य श्री को पुष्पांजलि अर्पित की। वरिष्ठ स्वयंसेवक एवं पूज्य श्री के सानिध्य में रहे चैनसिंह बैठवास ने श्रद्धापूर्वक उनके जीवन वृतांत के बारे में बताया। वरिष्ठ स्वयंसेवक नारायणसिंह माणकलाव ने उनके साथ बिताए समय के संस्मरण सुनाते हुए उनको नमन किया। पाली जिले के सोजत रोड कस्बे में इस अवसर पर पारिवारिक स्नेहमिलन रखा गया जिसमें प्रांत प्रमुख महोब्बतसिंह धींगाणा ने पूज्य श्री का जीवन परिचय दिया एवं केन्द्रीय कार्यकारी प्रेमसिंह रणधा ने पूज्यश्री के जीवन दर्शन एवं संघ विषय पर अपना उद्बोधन दिया। गुजरात के भावनगर के मनहर बा छात्रावास में केन्द्रीय कार्यकारी महेन्द्रसिंह पांची एवं गोहिलवाड़ राजपूत समाज के अध्यक्ष वासुदेवसिंह की उपस्थिति में जयंती मनाई गई। सुरेन्द्र नगर स्थित संघ कार्यालय 'शक्ति धाम' में वयोवृद्ध स्वयंसेवक अजीतसिंह धोलेरा के सानिध्य में जयंती मनाई गई। काणेटी में आयोजित कार्यक्रम में संभाग प्रमुख दीवनसिंह काणेटी सहित सभी स्वयंसेवक उपस्थित रहे। भाल प्रांत की धोलेरा व पांची शाखा में जयंती मनाई गई। अहमदाबाद शहर प्रांत का कार्यक्रम मेघाणी नगर में संपन्न हुआ जिसमें प्रांत प्रमुख जगतसिंह वलासणा सहित अन्य बंधु उपस्थित रहे। मेहसाणा शाखा में शाखा स्तर पर जयंती मनाई गई। भावनगर की भक्तिनगर शाखा में संभाग प्रमुख धर्मेन्द्रसिंह आंबली की उपस्थिति में स्वयंसेवकों ने जयंती मनाई। गोहिलवाड़ संभाग के मोरचंद प्रांत की मोरचंद शाखा के साथ-साथ सामपुरा, भलगामड़ा आदि गांवों में भी जयंती मनाई गई। राजपूत छात्रावास धंधुका व कड़ी तहसील के सरसाव में भी जयंती मनाई गई।

कुचामन फोर्ट

धंधुका, गुजरात

भावनगर, गुजरात

खरी-खरी

समाज की व्यवसायिकता

जोधपुर में पूज्य तनसिंह जी की जयंती के समय माननीय संघ प्रमुख श्री ने एक अप्रत्याशित एवं साहसिक निर्णय लिया। विगत लोकसभा चुनावों के समय भाजपा के प्रदेश नेतृत्व से बनी संवाद हीनता को तोड़ते हुए मुख्यमंत्री को कार्यक्रम में उनकी इच्छा जानते हुए आमंत्रित किया। यह निर्णय सामाजिक व्यवसायिकता का एक उत्कृष्ट उदाहरण था। सभी प्रकार की आलोचनाओं को नकार कर समाज की आवश्यकता को समझना और फिर सार्वजनिक रूप से उस आवश्यकता को प्रकट करना उस समय की मांग थी और उसे पूरा करने के लिए समाज एवं सरकार दोनों की नाराजगी की परवाह किए बिना प्रस्तुत हुए। लेकिन समाज और सरकार दोनों उस विषय को कितना समझ पाए? सरकार की सरकार जाने लेकिन समाज में उस समय आलोचना करने वाले बंधु आज कहां है? जो लोग उस समय कार्यक्रम में काले झण्डे दिखाने की बातें कर रहे थे वे ही विगत दिनों उन्हीं मुख्यमंत्री की सभा के बैनर और पोस्टर लगाते देखे जा सकते थे क्योंकि यहां मुख्यमंत्री के समक्ष उन्हें अपने एक नेता की छवि को सुदृढ़ करना था। किसी सामाजिक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री आए तो हम विरोध करेंगे, समाज से उनका संवाद बने तो हम विरोध करेंगे, समाज यदि दृढ़ता पूर्वक अपनी बात उनके सामने रखने के लिए उनको अपने बीच बुलाकर बात करे तो हमें एतराज है लेकिन हमारे चहेते किसी नेता के लिए हम उनका स्वागत करने को तैयार हैं, भीड़ जुटाने को तैयार हैं, सहयोग करने को तैयार हैं। ऐसे में तो सिद्ध होता है कि हमारा वह चहेता नेता हमारी नजर में समाज के अस्तित्व से बड़ा है, हम उसके सामने समाज को बौना मानते हैं और फिर भी अपने आपको समाज के मालिक समझते हैं कि हमारी इच्छा के बिना समाज कुछ कैसे कर सकता है? लेकिन यह बात यहीं समाप्त नहीं हो जाती। अपने आपको समझदार कहने वाले एवं तथाकथित रूप से राजनीतिक परिपक्व मानने वाले लोगों की भी यही स्थिति है। ऐसे अनेक लोग स्मृति पटल पर तैर रहे हैं जिन्होंने उस निर्णय पर अनेक तर्कों के माध्यम से प्रश्न उठाए थे। लेकिन आश्चर्य तब होता है जब वे सभी समझदार (?) लोग आज उसी सरकार के कृपा कटाक्ष पाने को लालायित हैं और ऐसी हर घटना को बड़े जोर-शोर से प्रचारित कर अपने आपको बड़ा बताते हैं। कृतार्थ मानते हैं। साथ ही अपनी व्यवसायिकता (प्रोफेशनेलिज्म) के नाम पर इसे उचित भी ठहराते हैं। उनके अनुसार यह प्रोफेशनेलिज्म है और हर समझदार व्यक्ति को प्रोफेशनल होना चाहिए। अपनी प्रगति के लिए हठधर्मिता छोड़कर परिस्थिति जन्य सकारात्मकता का उपयोग करना चाहिए। उनकी इस सोच पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं है। प्रोफेशनेलिज्म की यह मांग है और उन्हें ऐसा होना ही चाहिए। लेकिन समाज के स्तर पर परिस्थिति जन्य सकारात्मकताओं का समाज के हित में उपयोग करने पर इन्हें एतराज क्यों होता है? व्यक्तिगत स्तर पर यदि ये लोकतांत्रिक तौर तरीकों का उपयोग करते हुए राजनीति में आगे बढ़ना चाहते हैं तो उनके इस प्रयास की सराहना करनी चाहिए और समाज भी यही चाहता है कि वे या उनके नेता आगे बढ़ें और मजबूती को हासिल करें लेकिन समाज यदि लोकतांत्रिक तौर तरीकों का उपयोग करता है तो इन्हें एतराज होता है। तब ये अपनी समझदारी का लबादा ओढ़ कर सामाजिक निर्णयों पर प्रश्न उठाने लगते हैं। ये चाहते हैं कि समाज या तो वही आजादी के समय से पनपी नकारात्मक सोच के साथ जीता रहे या फिर जैसे ये चाहते हैं वैसे करे। ये जब विरोध में हों तब विरोध करें और ये जब पक्ष में हों तो समर्थन करे। इस प्रकार समाज इनकी नजर में कोई स्वतंत्र अस्तित्व वाली बड़ी इकाई नहीं है बल्कि इनके स्वयं के लक्ष्यों को हासिल करने में सहयोग करने वाली या साधन बनने वाली इकाई मात्र है। लेकिन यहां ये भूल जाते है कि समाज का जीवन व्यक्ति के जीवन से बहुत बड़ा होता है। समाज अनेकों पीढ़ियों के पसीने का परिणाम होता है और उसके आंचल में अनेकों समझदार लोग पनपे, पनप रहे हैं और पनपते रहेंगे। इसलिए व्यक्ति के विकास के लिए आवश्यक है कि वह समाज की सोच के साथ अपनी सोच का तालमेल बिठाए ना कि अपनी सोच के अनुसार समाज की सोच से तालमेल बिठाने की अपेक्षा करे क्योंकि ऐसी अपेक्षाएं कालांतर में उपेक्षा में तब्दील हो जाया करती हैं।

(पृष्ठ दो का शेष)

स्वतंत्र भारत... जनरल बिपिन रावत अभी सेनाध्यक्ष हैं। कर्नाटक से कुर्ग क्षत्रिय फिल्ड मार्शल करियप्पा एवं जनरल के.एस. थिमैया भारतीय थल सेना प्रमुख रहे। यही के क्षत्रिय देवराज अर्स एवं धरमसिंह कर्नाटक के मुख्यमंत्री रहे। रमनसिंह छत्तीसगढ़, योगी आदित्यनाथ उत्तरप्रदेश, त्रिवेन्द्रसिंह रावत उत्तराखण्ड एवं जयराम ठाकुर हिमाचल प्रदेश अभी मुख्यमंत्री है। राजनाथसिंह, नरेन्द्रसिंह, राधामोहनसिंह, डॉ. जितेन्द्रसिंह, जनरल वी.के. सिंह, राज्यवर्धनसिंह राठौड़, गजेन्द्रसिंह शेखावत, आर.के.सिंह अभी मोदी सरकार में मंत्री हैं। विजयनगरम् (आंध्रप्रदेश) महाराजा पी. अशोक गजपति राजू एवं बिहार से राजीव प्रताप रूडी मोदी सरकार में मंत्री रह चुके हैं। नायक जदुनाथसिंह, हवालदार मेजर पीरूसिंह शेखावत, केप्टन गुरुबचनसिंह सलारिया, मेजर शैतानसिंह भाटी, सूबेदार संजय डोगरा को भारतीय सेना का बहादुरी का सर्वोच्च पुरस्कार परमवीर चक्र मिल चुका है। खेलों में कुंवर दिग्विजय सिंह बाबू बाराबंकी (उ.प्र.) ओलम्पिक में स्वर्ण पदक जीती भारतीय टीम के कप्तान रहे। ध्यानचन्द और उनके भाई रूपसिंह ने ओलम्पिक में एक साथ हॉकी खेली व गोल्ड मेडल जीतने वाली टीम के सदस्य रहे। मेजर ध्यानचन्द भारतीय टीम के कप्तान रहे। बाद में ध्यानचन्द के पुत्र अशोक कुमार ने भी भारत की तरफ से ओलम्पिक हॉकी टीम में भाग लिया। मगनसिंह राजवी बीकानेर भारतीय फुटबाल एवं महेन्द्रसिंह धोनी भारतीय क्रिकेट टीम के कप्तान रहे। धोनी की कप्तानी में भारत ने विश्व लेवल पर क्रिकेट के फोरमेट की सभी ट्राफियां जीती जो वर्ल्ड रिकॉर्ड है। महाराज हनुमन्त सिंह बांसवाड़ा, अभी उ.प्र. सरकार के काबिना मंत्री तथा पूर्व सांसद चेतनसिंह चौहान, अजयसिंह जाड़ेजा, रूद्रप्रताप (आर.पी.) सिंह, रविन्द्र सिंह जाड़ेजा आदि राजपूत भारतीय क्रिकेट टीम के सदस्य रहे। प्रसिद्ध निशानेबाज एवं ओलम्पिक विजेता बीकानेर महाराजा डॉ. करणीसिंह जी के नाम से दिल्ली में बनी अन्तरराष्ट्रीय शूटिंग रेंज का नाम रखा गया है। बीकानेर के ही कर्नल राज्यवर्धनसिंह राठौड़ (वर्तमान में केन्द्र में मंत्री) ने ग्रीस ओलम्पिक में भारत की तरफ से पहली बार व्यक्तिगत प्रतिस्पर्धा में शूटिंग में रजत पदक जीता। राजसिंह डूंगरपुर क्रिकेट कमेन्ट्रेटटर, चयनकर्ता एवं भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड में चेयरमेन रहे। प्रोफेसर राजेन्द्रसिंह उर्फ रज्जु भैया राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के चौथे सर संघ चालक रहे। महाराजा मानसिंह जयपुर के नेतृत्व में राजस्थान के राजपूत खिलाड़ियों से सजी भारतीय पोलो टीम ने पोलो विश्व कप 1957 में जीता। मुलायम सिंह यादव के सलाहकार रहे अमरसिंह एवं लालू प्रसाद यादव के खास सिपहसालार रघुवंश प्रसाद सिंह क्षत्रिय हैं। मराठा राजनीति में क्षत्रियों का हमेशा वर्चस्व रहा है। महाराष्ट्र में वाई.बी. चव्हान, शरद पंवार, बसन्तदादा पाटिल, शंकरराव चव्हान, बाबा साहब भोंसले, नारायण राणे, अशोक चव्हान, पृथ्वीराज चौहान आदि मुख्यमंत्री अथवा केन्द्र में मंत्री रहे। राजू क्षत्रियों का आंध्रप्रदेश की राजनीति एवं व्यवसाय में दबदबा रहा है। पूर्वोत्तर राज्यों त्रिपुरा एवं मणिपुर में क्षत्रियों ने राजसत्ता में भागीदारी निभाई है और मुख्यमंत्री भी रहे।

द ग्रेट खली उर्फ दिलीपसिंह राणा हिमाचल प्रदेश के निवासी है तथा डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ. कुश्ती के प्रसिद्ध खिलाड़ी हैं। इसके अलावा अनेक क्षत्रियों ने राजनीति, शिक्षा, खेल, कला, आध्यात्म, व्यवसाय, प्रशासनिक क्षेत्र, सेना, समाजसेवा आदि में अपना योगदान देकर भारत को आगे बढ़ाया है। यहां संक्षिप्त में कुछ महत्त्वपूर्ण क्षत्रियों का परिचय ही हो पाया है परन्तु अनेक राजपूतों ने अपने दमखम का परिचय देकर भारत के महान इतिहास में अपना नाम अंकित किया है।

नरपतसिंह राजगढ़ को पितृशोक

श्री हरिसिंह

संघ के पोकरण संभाग के स्वयंसेवक नरपतसिंह राजगढ़ के पिता **श्री हरिसिंह** राजगढ का 1 अगस्त को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

खंगारसिंह झलोड़ा को पितृशोक

श्री पर्बतसिंह

संघ के पोकरण संभाग के स्वयंसेवक खंगारसिंह झलोड़ा के पिता **श्री पर्बतसिंह** का 11 अगस्त को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति संवेदना व्यक्त करते हुए दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

महिपालसिंह चूली को भ्रातृशोक

सवाईसिंह चूली

बाड़मेर शहर प्रांत प्रमुख महिपाल सिंह चूली के बड़े भाई व कल्याण सिंह चूली के पिताजी **सवाईसिंह चूली** (49 वर्ष) का 4 अगस्त को देहावसान हो गया। पथप्रेरक परिवार शोक संतप्त परिवार के प्रति अपनी हार्दिक संवेदना व्यक्त करता है एवं दिवंगत आत्मा की शांति के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करता है।

तनुश्री कंवर को दो स्वर्ण पदक

सीकर जिले के भगतपुरा की निवासी तनुश्री कंवर शेखावत ने जिला स्तरीय ओपन शूटिंग प्रतियोगिता में एयर राइफल जुनियर वर्ग व यूथ वर्ग दोनों में स्वर्ण पदक हासिल किया है। संघ द्वारा संचालित मीरा गर्ल्स स्कूल में 8वीं कक्षा में अध्ययनरत 14 वर्षीय तनुश्री ने विगत वर्ष राष्ट्रीय प्रतियोगिता में भी क्वालिफाई किया है। तनुश्री के पिता जितेन्द्रसिंह एडवोकेट हैं वहीं माता मीरा गर्ल्स स्कूल में प्रिंसीपल है।

आशा कंवर ने NET में क्वालिफाई किया

हाल ही में जारी हुए UGC NET (हिन्दी) के परिणाम में आशा कंवर महरोली ने क्वालिफाई किया है। चुरू जिले के भोजुसर में व्याख्याता के रूप में कार्यरत आशा कंवर का पीहर अड़सीसर (चुरू) है और शादी के उपरान्त अध्ययन जारी रखते हुए इन्होंने B.A., B.Ed किया। पहले वरिष्ठ अध्यापक बनी, फिर स्कूल व्याख्याता एवं अब कॉलेज व्याख्याता की योग्यता हासिल की है। इन्होंने संघ के अनेक शिविर किए हैं।

व्रत के अवसर पर बालिकाओं का कार्यक्रम

अहमदाबाद ग्रामीण प्रांत की काणेटी बालिका शाखा में 26 जुलाई को गौरी व्रत व जय पार्वती व्रत के अवसर पर बालिकाओं का एक दिवसीय कार्यक्रम रखा गया जिसमें गुजरात की महिला प्रकोष्ठ प्रभारी जागृति बा हरदासकाबास भी शामिल हुईं। प्रातः 9 बजे प्रारम्भ हुआ कार्यक्रम सायं 5 बजे संपन्न हुआ। कार्यक्रम में फलाहार, चर्चा, खेल, उद्बोधन आदि कार्यक्रम हुए। जागृति बा ने पूज्य तनसिंह जी व संघ का परिचय देते हुए शाखा व शिविर का महत्व बताया। संघ शिक्षा से पारिवारिक जीवन में होने वाले सुधार के बारे में बताया। नारी धर्म और कुटुंब प्रणाली के बारे में भी बताया। अंत में प्रश्नोत्तरी हुई जिसमें बालिकाओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया। बालिकाओं ने अपने अनुभव व सुझाव भी बताए। कार्यक्रम में काणेटी, पलवाड़ा, पिंपण, खोड़ा, साणंद, गांधीनगर आदि स्थानों से बालिकाएं पहुंची। नयन बा काणेटी व हिनल बा काणेटी ने सहयोग किया। कार्यक्रम की व्यवस्था काणेटी मंडल द्वारा की गई।

जैसलमेर में सामूहिक शाखा

जैसलमेर शहर प्रांत में तनाश्रम मंडल में लगने वाली 7 शाखाओं की सामूहिक शाखा 5 अगस्त रविवार को प्रातः 8 बजे संघ कार्यालय तनाश्रम में लगाई गई। इस शाखा में जवाहिर शाखा, विक्रमादित्य शाखा, सीमावर्ती छात्रावास शाखा, तनाश्रम बाल शाखा (सायंकालीन) तनाश्रम कार्यालय शाखा (प्रातःकालीन), वीर आलाजी शाखा एवं भटियाणी छात्रावास शाखा के स्वयंसेवक शामिल हुए। तनाश्रम साप्ताहिक शाखा के स्वयंसेवक भी सामूहिक शाखा में उपस्थित रहे। सभी ने मिलकर शाखा लगाई एवं आपस में परिचय व मेलजोल बढ़ाया।

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद का प्रतिभा सम्मान समारोह

श्री राजपूत विकास ट्रस्ट साणंद ने विगत 10 वर्षों की भांति 22 जुलाई को अपना प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजित किया जिसमें 9वीं से लेकर मास्टर डिग्री तक के विद्यार्थियों को सम्मानित किया गया। अध्यक्ष दशरथसिंह चौहान ने संस्था के बारे में जानकारी देते हुए सबका स्वागत किया। मुख्य अतिथि अवनी बा मोरी, डायरेक्टर हायर सैकण्डरी शिक्षा गुजरात ने क्षत्रिय संस्कारों व महिला शिक्षण की बात कही। कार्यक्रम अध्यक्ष भास्कर भाई मेहता ने संस्कृत में वर्णित क्षत्रिय परम्परा का वर्णन किया। जिलुभा झाला ने संस्था की शिक्षण समिति के बारे में बताया। मंत्री नवलसिंह पिंपण ने आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में संघ के संभाग प्रमुख दीवानसिंह काणेटी भी उपस्थित रहे।

31 जुलाई को माननीय संघ प्रमुख श्री अल्प प्रवास के लिए सीकर स्थित दुर्गा महिला विकास संस्थान पधारे एवं छात्रावास व विद्यालय की व्यवस्थाओं के बारे में जानकारी लेकर आवश्यक निर्देश दिए। इस अवसर पर छात्रावास की बालिकाओं से मिलकर उनसे संवाद किया एवं परमेश्वर का स्मरण रखते हुए नियमित अध्ययन करने की सलाह दी।

सिंधलावाटी परगने की वार्षिक बैठक

जालोर की आहोर तहसील के सिधवावाटी परगने के सिंधल राजपूतों की वार्षिक बैठक 24 जुलाई को कवराड़ा स्थित बाबा रामदेव मंदिर में संपन्न हुई। महंत लक्ष्मणसिंह गिरी के सानिध्य में आयोजित बैठक में ईश्वरसिंह थुंबा, गुमानसिंह रोडला, अमरसिंह पांचोटा, केशरसिंह केराल, शैतानसिंह आकोरापादर, सौभाग्यसिंह पांचोटा, गजेन्द्रसिंह थुंबा, शैतानसिंह रोडला, गणपतसिंह भूति, नरपतसिंह शंखवाली, चंदनसिंह कवराड़ा आदि ने विचार-विमर्श में भागीदारी निभाई। विचार-विमर्श में क्षात्रधर्म को समझने एवं तद्नुकूल अभ्यास की आवश्यकता जताई। नियमित मेलजोल के द्वारा आपसी प्रेम को बढ़ाने की आवश्यकता जताई। नशे की प्रवृत्ति से बचने एवं विशेष रूप से युवाओं को बचाने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता जताई।

IAS/ RAS
तैयारी करने का राजस्थान का सर्वश्रेष्ठ संस्थान
स्प्रिंग बोर्ड
Spring Board
Springboard Academy, Main Riddi Siddi choraha,
Opposite Bank of Baroda, Gopalpura bypass Jaipur
website : www.springboardindia.org

श्री संघशक्ति प्रकाशन प्रन्यास (मालिक) के लिए मुद्रक व प्रकाशक लक्ष्मणसिंह द्वारा गजेंद्र प्रिन्टर्स, सांगों का रास्ता, किशनपोल बाजार, जयपुर-302003 (दूरभाष 2313462) से मुद्रित एवं ए/8, तारानगर, झोटवाड़ा, जयपुर- 302012 **(दूरभाष: 2466353 व 2466387)** से प्रकाशित। सम्पादक- लक्ष्मणसिंह। Email:- pathprerak1997@gmail.com, Web site:- www.shrikys.org